दीन
का
सही तसव्वुर

मौलाना मोहम्मद यूसुफ़ इस्लाही

अनुवाद :
डॉ. रफ़ीक़ अहमद

किताब का मूल नाम	:	सही तसुव्वुरे दीन
नाम किताब (अनुवादित)	:	दीन का सही तसव्वुर
लेखक	:	मौलाना मोहम्मद यूसुफ़ इस्लाही
हिन्दी अनुवाद	:	डा० रफ़ीक़ अहमद (पी एच०डी०) प्रवक्ता मुस्लिम इण्टर कालेज फ़तेहपुर
हिन्दी एडीशन	:	2010
प्रतियाँ	:	1000
पृष्ठ	:	16
कम्पोज़िंग	:	शाहनवाज़
प्रिन्टर्स	:	रहमान प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स आबूनगर–फ़तेहपुर

मिनजानिब

ख़िज़रा लाइब्रेरी

(इस्लामी किताबों का मर्कज़)

सय्यदवाड़ा, फ़तेहपुर

ज़ेरे निगरानी : जमाअते इस्लामी हिन्द,फ़तेहपुर

بسم الله الرحمن الرحيم

दीन का सही तसव्वुर क्या है, यह मात्र एक इल्मी क़िस्म का दार्शनिकों जैसा सवाल नहीं है और न इस पर ग़ौरोफ़िक्र करने का मतलब सिर्फ़ यह है कि मालूमात में कुछ बढ़ोतरी किया जाये। यह एक अमली सवाल है- जो शख़्स भी दीन से मुहब्बत रखता है, दीन के तक़ाज़े पूरे करना चाहता है, दीन के रास्ते पर चलना चाहता है और दीनदाराना ज़िन्दगी गुज़ारना चाहता है, उसके लिये ज़रूरी है कि वह पहले दीन का सही तसव्वुर मालूम करे, प्रमाणित साधनों से मालूम करे मात्र सुनी सुनाई बातों पर भरोसा न करे, न उन प्रचलित तरीक़ों और आम लोगों में फैली हुई परम्पराओं को ही प्रमाणित समझे, बल्कि गम्भीरता के साथ ख़ुदा की किताब और रसूल सल्ल० की सुन्नत से अस्ल हक़ीक़त को पाने की कोशिश करे, ऐसा न हो कि किसी ग़लत तसव्वुरे दीन के तहत वह ज़िन्दगी गुज़ारे और अपने ज़ोम और घमण्ड में यह समझे कि वह दीन का हक़ अदा कर रहा है लेकिन दीन की नज़र में उसकी ज़िन्दगी दीन की पसंदीदा ज़िन्दगी न हो या ख़ुदा-नाखास्ता वह मुजरिम और अपराधी क़रार पाये। दीन का सही तसव्वुर मालूम करके और दीन की सही पैरवी करके ही एक शख़्स उस कामयाबी और सफलता का हक़दार हो सकता है जिसका ख़ुदा ने मोमिनों और परहेज़गारों से वादा फ़रमाया है।

दीन के बारे में आम ख़्याल यह पाया जाता है कि आदमी इबादत व रियाज़त और ज़िक्र व फिक्र में मशग़ूल रहे, बाज़ चीज़ों में हलाल व हराम की सख़्ती से पाबन्दी करे और एक ख़ास क़िस्म का लिबास इख़्तियार कर ले।

बस ऐसा शख़्स दीनदार है, दीन का मतलूब इन्सान है, और कामयाबी व सफलता उसके लिये लाज़िमी है। मगर क़ुरआन व सुन्नत के अध्ययन से यह मालूम होता है कि दीन का यह तसव्वुर ग़लत और नाक़िस है, और वह लोग घाटे में हैं जो इस सीमित और ग़लत तसव्वुरे दीन के तहत अपने ज़ोम में दीन दाराना ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और यह समझते हैं कि उन्हीं जैसे लोग ख़ुदा को पसन्द और मतलूब हैं, और वह वाक़ई ख़ुदा की नज़र में दीनदार हैं। क़ुरआन व हदीस के अध्ययन से ऐसा मालूम होता है कि दीन का यह सीमित और ग़लत तसव्वुर हर दौर में इन्सानी ज़ेह्न को अपना निशाना बनाता रहा है, और लोग इस ग़लत फ़हमी का शिकार होते रहे हैं कि महज़ ख़ुदा की इबादत और ज़िक्र व फ़िक्र ही दीन का अस्ल मक़सद है, दुनयवी ज़िम्मेदारियों को पूरा करना और इन्सानों के अधिकारों के निर्वहन की कोशिश करना दीनदारी के ख़िलाफ़ है। इस सीमित और नापसन्दीदा तसव्वुरे दीन का सबसे ज़्यादा ख़तरनाक पहलू यह है कि ऐसा इन्सान धीरे-धीरे लोगों के अधिकारों से बिल्कुल निश्चिंत और बेपरवाह हो जाता है और अकसर ख़ुदा के बन्दों के साथ अन्याय एवं अत्याचारपूर्ण रवइय्या इख़्तियार करने के बावजूद इस ज़ोम में गिरफ़्तार रहता है, कि वह दीनदार है और आख़िरत की कामयाबी उसी के लिये ख़ास है। क़ुरआन ने इस तसव्वुरेदीन को सख़्ती के साथ रद्द किया है और दुनिया की नेमतों और आसानियों से बेज़ारी और दुनिया से सम्बंध तोड़ लेना ग़लत क़रार दिया है, और इस ग़लत तसव्वुरे दीन को चुनौती देते हुये कहा है कि कौन है जिसने दुनिया की नेमतों और सौन्दर्य को हराम किया है,

लाये वह सुबूत और प्रमाण -

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِىْ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ قُلْ هِىَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ط (الاعراف: ٣٢)

ऐ अल्लाह ! इनसे कहिये, किसने अल्लाह की इस ज़ीनत को हराम किया है जिसे अल्लाह ने अपने बन्दों के लिये निकाला था और किसने ख़ुदा की बख़्शी और पाक चीज़ें हराम कर दीं, कहिये, यह सारी चीज़ें दुनिया की ज़िन्दगी में भी ईमान लाने वालों के लिये हैं और क़ियामत के रोज़ तो पूरी तरह से उन्हीं के लिये होंगी ।

एक दूसरे मुक़ाम पर बड़ी स्पष्टता के साथ बताया गया है, कि सारे इन्सानों को ख़ुदा ने एक ही माँ-बाप से पैदा किया है, उन सब को अल्लाह ने पैदा किया है इसलिये यह सब अल्लाह के बन्दे हैं, और मख़लूक़ होने के नाते यह सारे ही लोग अल्लाह को प्यारे हैं फिर ये सब चूँकि एक ही माँ-बाप से हैं इसलिये यह सब आपस में भाई-भाई हैं और उनके दरम्यान भाईचारा, मुहब्बत, एक दूसरे के अधिकारों का लिहाज़ और भावनाओं का ख़्याल रखना चाहिये। और फिर इसके बाद बहुत ही ताक़ीद के अन्दाज़ में जिस तरह अपना यह हक़ बताया है कि मेरे बन्दे सिर्फ़ मुझ ही से डरें इसी तरह इसी आयत में यह ताक़ीद भी की है कि बन्दे आपस की रिश्तेदारियों और क़राबतदारों के अधिकारों का पूरा-पूरा लिहाज़ रखें ।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا (النّساء ١)

इन्सानों, डरते रहो अपने रब से जिसने तुम्हें एक जान से पैदा

किया और उसी जान से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें दुनिया में फैला दी, डरते रहो उस अल्लाह से जिसका वास्ता देकर तुम एक दूसरे से अपने अधिकारों का मुतालबा करते हो, और रहिम और रिश्ते के अधिकारों का लिहाज़ रखो, यक़ीन रखो अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है । इन दोनों आयतों से यह हक़ीक़त पूरी तरह निखर कर सामने आ जाती है कि दीन व दुनिया की नेअमतों से घृणा, बेज़ारी और दुनिया से फ़रार के तसव्वुर को ग़लत क़रार देता है, और ताक़ीद करता है, कि इन्सानों के दरम्यान रह कर उनसे प्यार व मुहब्बत का तअल्लुक़ रख कर और उनके अधिकारों का पूरा-पूरा लिहाज़ करके ही दीने हक़ का तक़ाज़ा पूरा किया जा सकता है, क़ुरआन पाक का तसव्वुरे दीन यही है और ऐसे ही दीनदार लोगों से मतलूब हैं।

खुदा के रसूल सल्ल० ने भी अलग-अलग मौक़ों पर इस बीमार ज़ेहन की इस्लाह फ़रमाई है और समझाने के लिये पैग़म्बराना दूरदर्शिता की सर्वोत्तम शैली इख़्तियार की है कि अस्ल हक़ीक़त दिल में उतर जाये। और ग़लत फ़हमी के लिये कोई गुन्जाइश ही बाक़ी न रहे, सहाबा कराम की एक मजलिस में आपने एक सवाल उठाया- اَتَدْرُوْنَ مَنِ الْمُفْلِسُ ؟

जानते हो ग़रीब कौन है सहाबाकराम ने जवाब दिया اَلْمُفْلِسُ فِيْنَا مَنْ لَّا دِرْهَمَ لَه' وَلاَ مَتَا عَ हम में ग़रीब और निर्धन व्यक्ति वह है जिसके पास रुपया-पैसा न हो और न कोई मालो-दौलत। यह जवाब देने के बाद सहाबाकराम रज़ि० बहुत ही शौक, दिलचस्पी और हक़ीक़त तलब निगाहों के साथ ख़ुदा के रसूल सल्ल० की तरफ़ ग़ौर से देखने लगे कि आख़िर ख़ुदा के रसूल सल्ल० आप कौन सी हक़ीक़त ज़ेह्न नशीन कराना

चाहते हैं आप सल्ल० ने फ़रमाया -

اِنَّ الْـمُـفْـلِـسَ مِنْ اُمَّتِیْ مَنْ یَّاتِیْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ بِصَلاَةٍ وَصِیَامٍ وَزَکٰوةٍ وَیَاْتِیْ وَقَدْ شَتَـمَ هٰـذا وَقَـذَفَ هٰـذَا وَاَکَلَ مَالَ هٰذَا وَسَفَکَ دَمَهٰذا وَضَرَبَ هٰذا فَیُعْطیٰ هٰـذا مِـنْ حَسَـنَاتِهٖ وَهٰذا مِنْ هِسَنَاتِهٖ فَاِنْ فَنَیَتْ حَسَنَاتُه' قَبْلَ اَنْ یُّقْضیٰ مَاعَلَیْهِ اُخِذَ مِنْ خَطَا یَاهُمْ فَطُرِحَتْ عَلَیه ثُمَّ طُرِحَ فِی النَّارِ (مُسلم)

''मेरी उम्मत का अस्ल ग़रीब और निर्धन वह व्यक्ति है, जो क़ियामत के रोज़ अपनी नमाज़ों, रोज़ों और ज़कात का अमल लिये हुये ख़ुदा के हुज़ूर आयेगा मगर इस तरह आयेगा कि फ़लां शख़्स को उसने गाली दी है, फ़लां शख़्स पर इल्ज़ाम लगाया है, फ़लां शख़्स का माल खाया है, फलां शख़्स का नाहक़ ख़ून बहाया है और फ़लां शख़्स को मारा-पीटा है। तो उसकी यह सारी नेकियां ख़ुदा उन शिकायत करने वाले लोगों पर तक़सीम कर देगा। अब अगर उसकी यह सारी नेकियां शिकायत करने वालों पर की गयी ज़्यादतियों की तलाफ़ी से पहले ख़त्म हो जायेंगी तो फिर शिकायत करने वालों के गुनाहों का बोझ उसके सर डाल दिया जायेगा और फिर उसको जहन्नम की आग में झोंक दिया जायेगा''

अपने उठाये हुये सवाल के जवाब में आप सल्ल० ने जो वज़ाहत फ़रमाई । उसमें सुनने और पढ़ने वालों को जो चीज़ बहुत ज़्यादा प्रभावित करती है वह आप सल्ल० का समझाने का पैग़म्बराना अन्दाज़ है। और हक़ीक़त यह है कि उससे ज़्यादा असर डालने वाला, दिल को लगने वाला और इन्क़िलाब पैदा कर देने वाला अन्दाज़ मुम्किन नहीं है। इस अन्दाज़ का एक पहलू तो यह है कि हर सुनने वाला कांप उठे, वह अपने अन्जाम की फ़िक्र में बेक़रार होकर अपनी ज़िन्दगी से इस तरह की कोताहियां और

गन्दगियां पत्तों की तरह झाड़ देने के लिये बेचैन हो जाये । और अपनी जिन्दगी को दीन के इस सही तसव्वुर के तहत बनाने व संवारने का ख़ुशगवार और अटल फ़ैसला कर ले और यह निहायत ही अहम पहलू है, दूसरा पहलू यह सामने आता है कि आप सल्ल० ने सिर्फ़ यही नहीं किया कि उम्मत को ज्यों का त्यों पहुंचाने की कोशिश फ़रमाई बल्कि हक़ पहुंचाने के लिये ऐसे असर डालने वाला, दिल को लगने वाला और हक़ीमाना (तत्वदर्शितापूर्ण) अन्दाज़ इख़्तियार किया कि सुनने वाले उस हक़ को अपने दिल की आवाज़ और अपनी सबसे बड़ी ज़रूरत समझ कर उठा लें। अन्दरूनी जज़्बे से वह अपनी ज़िन्दगियों में खुश गवार इन्क़िलाब लाने की धुन में लग जायें। और हक़ को अपना सबसे ज़्यादा महबूब और क़ीमती सरमाया समझ कर उसे लेने के लिये बेइख़्तियार लपकें ।

दाइये आज़म सल्ल० ने दीन का सही तसव्वुर समझाने के लिये अचानक तफ़हीम शुरू नहीं फ़रमाई बल्कि पहले एक सवाल उठाया, मौजूद लोगों से जवाब चाहा, उनका जवाब इत्मीनान से सुना और फिर मौजूद लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जे पाया और जब दिल की ज़मीन हिदायत का बीज क़ुबूल करने के लिये तैयार हो गयी, तो आप सल्ल० ने मौजूद लोगों के ज़ेह्नों को हिक्मत के साथ दूसरी दुनिया की तरफ़ मोड़ा और बहुत ही नफ़सीयाती अन्दाज़ में बताया कि मोमिन को तो हर मामले में आख़िरत के नुक्तये नज़र (दृष्टिकोण) से सोचना चाहिये। दुनिया की खुशहाली या ग़रीबी यहां का साज व सामान या ग़रीबी व मुफ़लिसी तो वक़्ती चीज़ है अस्ल में तो दीवालिया और ग़रीब वह शख़्स है जो हश्र के मैदान में खाली हाथ रह जाये। फिर आपने सादे अन्दाज़ में ही यह हक़ीक़त नहीं समझाई कि अस्ल ग़रीब,

मैदाने हश्र का मुफ़लिस ही क्यों है बल्कि आपने बहुत ही इबरत व नसीहत भरे अन्दाज़ में ख़ुदा के सामने हाज़री की ऐसी तस्वीर खींची कि सारे मौजूद लोग थोड़ी देर के लिये ख़ुद को मैदाने हश्र में मौजूद महसूस करते हैं और ऐसा लगता है कि गोया उनके सामने एक बन्दा नमाज़, रोज़ा और ज़कात जैसी बुनियादी और अहम इबादतों का भण्डार लिये हुये ख़ुदा के हुज़ूर पहुंचता है लेकिन उसके साथ कुछ फ़रियादी भी उसका दामन और गरेबान पकड़े आते हैं यह फ़रियाद करने वाले ख़ुदा से फ़रियाद करते हैं कि परवर दिगार इसने हमारे अधिकारों का हनन किया हमारे साथ ज़्यादती की, हमारी इज़्ज़त व आबरू लूटी है और हमारा दिल दुखाया है, ख़ुदा ने इन मज़लूमों और पीड़ितों की फ़रियाद सुनी और फिर यह दीन के सही तसव्वुर से नावाक़िफ बन्दा इन फ़रियादियों के गुनाहों की सज़ा में ज़िल्लत और अपमान के साथ जहन्नम में झोंक दिया जाता है ।

इस पैग़म्बराना अन्दाज़े बयान का कमाल यह है कि आदमी बन्दे के अधिकारों से लापरवाही और उस पर जुल्म व ज़्यादती का अन्ज़ाम अपनी कल्पना की आंखों से देख कर कांप उठता है और बेइख़्तियार कांपते हुए अटल फ़ैसला करता है कि अब कभी ख़ुदा के सामने किसी बन्दे का दिल न दुखाऊंगा, कभी किसी का हक़ न मारूंगा। और कभी किसी की इज़्ज़त व आबरू को बट्टा न लगाऊंगा और यह हक़ीक़त है कि इस ख़ुश गवार और फ़ैसला तक मुख़ातिब को पहुंचाने में दाइये आज़म सल्ल० की पैग़म्बराना तफ़हीम का बहुत बड़ा हिस्सा है।

जो अस्ल और अहम हक़ीक़त आप सहाबाकराम रज़ि० के दिलों में बिठाना चाहते हैं वह है ''दीन का सही तसव्वुर'' ----- दीन का सही

तसव्वुर न हो तो ज़िन्दगी में न वह सुन्दरता और सम्पूर्णता पैदा हो पाती है जो दीन को मतलूब है और न ख़ुदा के नज़दीक आदमी दीनदार क़रार पाता है। फिर दीनदाराना ज़िन्दगी गुज़ारने का मतलब ही क्या अगर आदमी को आख़िरत में कामयाबी व नजात नसीब न हो । दीन व दुनिया का फ़र्क़ एक बहुत ही गुमराह करने वाला तसव्वुर है। इस ग़लत तसव्वुर के नतीजे में एक शख़्स ख़ुद को दीनदार समझता है दीनदारी के घमण्ड में मुब्तेला होता है, लेकिन हक़ीक़त में वह दीन से बहुत दूर होता है, बल्कि दीन की निगाह में बदतरीन मुजरिम होता है। वह इस गुमान में रहता है कि वह आख़िरत के लिये सामान तैयार कर रहा है और वहां इसका दामन भरा हुआ होगा लेकिन हक़ीक़त में वह दिवालिया होता है और हश्र के मैदान में खाली हाथ रह जाता है- ऐसा शख़्स ख़ुद भी दीन और दीन की बर्कतों से वंचित होता है और दूसरे लोग भी उसकी ज़िन्दगी से दीन सीखने और दीन की अज़मत महसूस करने के बजाये दीन से बिदकने लगते हैं और यह ग़लत तसव्वुरे दीन ऐसे लोगों को बज़ाहिर दीनदारी इख़्तियार किये रहने के बावजूद दीन से बहुत दूर कर देता है। इसमें शक व शुब्हे की क्या गुन्जाइश है कि दीन में इबादात की बड़ी अहमीयत है। इस्लामी ज़िन्दगी की सारी ख़ूबसूरती और मनोहरता इबादत की ही इमारत पर क़ायम है और दीन के इन मौलिक सिद्धान्तों के बग़ैर दीन के न कोई मायने हैं और न दीन का कोई तसव्वुर । लेकिन इन खम्भों और सुतूनों पर दीन की इमारत उसी वक़्त क़ायम होती है जब इबादत करने वाले को उनकी अस्ल रूह की समझ हासिल हो और वह दीन में उनकी अस्ल हैसयत को समझ कर दीन की मन्शा के मुताबिक़ उन पर अमल पैरा होता हो।

ख़ुदा के रसूल सल्ल० ने उम्मत को दीन के बारे में जो सही तसव्वुर दिया है इसका निचोड़ यह है कि दीन दरअस्ल ख़ुदा और ख़ुदा के बन्दों के अधिकारों के सन्तुलित मिलान का नाम है, दीनदार मुसलमान वह है जो ख़ुदा और बन्दे दोनों का हक़ अदा करता है। बात यह नहीं है कि इबादत करने वाले को ख़ुदा के बन्दों के अधिकारों को अदा करना चाहिये- यह अन्दाज़ बहुत ढीला है, उससे अस्ल हक़ीक़त की सही और वाक़ई तर्जुमानी नहीं होती, जिस तरह यह अन्दाज़े बयान सही नहीं है कि बन्दों के हुक़ूक़ अदा करने वाले को नमाज़ व रोज़े का भी पाबन्द होना चाहिये - सही बात यह है कि ख़ुदा का हक़ और बन्दे का हक़ एक ही इस्लामी चरित्र के दो रुख हैं। जिस तरह सिक्के के दो रुख़ होते हैं। और यह कहने की बात नहीं होती कि सिक्के का अगर यह रुख़ है तो वह भी होना चाहिये। बल्कि सिक्का तो होता ही वह है जिसके दो रुख हों, इस्लामी अक़ीदे के स्रोत से जिस तरह इबादात का जज़्बा उभरता है उसी तरह इन्सानी अधिकार का एहसास और लाज़िमी तौर पर ग़ायब होते हैं और ईमान बिल्लाह के अक़ीदे से एक ही वक़्त में किरदार और चरित्र के दोनों हसीन रुख जन्म लेते हैं।

बन्दों के अधिकारों को हनन करने वाला बन्दों के साथ अन्यायपूर्ण रवइय्या इख़्तियार करने वाला, अगर नमाज़, रोज़े की पाबन्दी करता नज़र आता है तो यक़ीन कर लीजिये कि वह उन इबादत की रूह को नहीं पा सका है। वह दीन की सही समझ से वंचित है, और वह दीन की इताअत और आज्ञापालन दीन के निर्देशों के मुताबिक़ नहीं कर रहा है। इसी तरह अगर एक शख़्स बन्दों के साथ अच्छे व्यवहार का प्रदर्शन कर रहा है, लेकिन नमाज़, रोज़ा और दूसरी बुनियादी इबादतों से बिल्कुल ग़ाफिल है, तो

वह भी दीन से वंचित है और उसकी यह ज़िन्दगी भी वह इस्लामी ज़िन्दगी नहीं है जो इस्लाम चाहता है।

ख़ुदा और बन्दों के अधिकारों की मिसाली एहसास और मतलूब इम्तिज़ाज (मिश्रण) वह पवित्र और पाक़ीज़ा नमूना है जो दाइये आज़म सल्ल० की ज़िन्दगी में नज़र आता है --- आप सल्ल० हज़रत आयशा रज़ि० की रहाइशगाह में बैठे हुये हैं, घर के लोगों से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की गुफ्तगुयें हो रही हैं और एक सुहावना और ख़ुशगवार घरेलू माहौल है कि इसी दौरान मस्जिद से अज़ान की आवाज़ बुलन्द होती है, अज़ान की आवाज़ सुनते ही आप सल्ल० यकायक इस तरह उठ जाते हैं गोया घर के यह सारे लोग अजनबी हैं और आप सल्ल० को इनसे कोई लेना-देना नहीं- यह ख़ुदा से हुस्ने तअल्लुक़ का रुख़ है।

दूसरा रुख़ देखिये ! आप मस्जिदे नबवी में नमाज़ पढ़ा रहे हैं दिल लगा कर क़ुरआन पाक की तिलावत कर रहे हैं और बेइख़्तियार आप सल्ल० का जी चाहता है कि क़िरअत कुछ लम्बी कर दें, इसी दौरान किसी बच्चे के रोने की आवाज़ आती है, आवाज़ सुनते ही आप नमाज़ छोटी कर देते हैं कि माँ के नाज़ुक दिल को बच्चे के रोने की वजह से कहीं तक़लीफ न पहुंच जाये- यही दीन का सही तसव्वुर है, और यही पसन्दीदा इस्लामी ज़िन्दगी है। इस्लाम एक मुकम्मल दीन है, वह दुनिया और दीन को दो अलग-अलग खानों में बांटने का समर्थक नहीं है। वह इबादतों की पाबन्दी की भी ताक़ीद करता है और बन्दे के अधिकारों की मुकम्मल सूची देकर उन के अदा करने का भी ताक़ीदी हुक़्म देता है बल्कि उनको अदा किये बग़ैर नजात की ज़मानत नहीं देता और ऐसे नादान व दीनदार को मैदाने हश्र का

सबसे बड़ा मुफ़लिस और ग़रीब क़रार देता है ।

सहाबाकराम रज़ि० के ज़ेह्नों में दीन का यह सही तसव्वुर बिठाने और सही रेखाओं पर उनके ज़ेह्नों की तर्बियत करने के लिये आप सल्ल० ने एक तरफ़ तो यह हकीमाना अन्दाज़ इख़्तियार फ़रमाया, दूसरी तरफ़ अपने अमल से इन्तिहाई सबक़ और नसीहत देने वाले और दिलों को पिघला देने वाले नमूने पेश फ़रमाये ।

हुज़ूर सल्ल० सख़्त बुख़ार के आलम में हैं, बुख़ार की तेज़ी और शिद्दत से बदन जल रहा है, सर में तेज़ दर्द है, और तकलीफ़ के मारे आप सल्ल० ने सर को कपड़े से कस कर बांध रखा है। इसी सख्त तकलीफ़ और बीमारी में आप हज़रत फ़ज़ल बिन अब्बास रज़ि० से कहते हैं, फ़ज़ल मुझे मस्जिद ले चलो और लोगों से कहो कि वह मस्जिद में जमा हो जायें ''हज़रत फ़ज़ल रज़ि० ने आप को मस्जिद पहुंचाया और मस्जिद में लोग अपने रसूल सल्ल० की तक़रीर सुनने के लिये जमा हो गये। आप सल्ल० मेम्बर पर तशरीफ़ ले गये, अल्लाह की तारीफ़ और तौसीफ़ बयान फ़रमाई और फ़रमाया''

''लोगों ! मैं तुमसे बहुत जल्द रुख़सत होने वाला हूँ । लोगो ! जिस किसी की पीठ पर भी मैंने कभी कोड़ा मारा हो तो वह मुझसे बदला ले ले मेरी पीठ हाज़िर है, मैं चाहता हूँ कि वह मुझसे दुनिया ही में बदला ले ले, अगर मैंने किसी को नाहक़ बुरा भला कहा हो तो मैं हाज़िर हूँ वह भी यहीं मुझ से अपना बदला ले ले और जिस शख़्स का मेरे ज़िम्मे कोई भी माल हो तो वह मुझ से वसूल करले और यह ख़ौफ़ न करे कि मैं बाद में उसकी कसर निकालूगा यह मेरी शान के ख़िलाफ़ है। तुममे सब से ज़्यादा मुझे वह आदमी प्यारा है जो

मुझ से अपना हक़ दुनिया ही में वसूल ले । या फिर ख़ुशी-ख़ुशी माफ़ कर दे। ताकि मैं अपने रब के सामने ख़ुश-ख़ुश हाज़िर हूँ । लोगों ! तुम में से जिस किसी ने भी किसी का हक़ दबा रखा हो वह उसका हक़ लौटा दे, और दुनिया की रुसवाई और अपमान का ख़्याल न करे वरना फिर आख़िरत की रुसवाई के लिये तैयार रहे। वहां की रुसवाई दुनिया की रुसवाई से कहीं ज़्यादा सख़्त और भयानक होगी ।

तक़रीर का एक जुमला यक़ीन व ईमान की इस कैफ़ीयत को पुख़्ता करता है कि बन्दों के अधिकारों से ग़ाफ़िल रह कर आदमी ख़ुदा के सामने सम्मानित नहीं हो सकता और आख़िरत की फ़लाह व कामयाबी उसी ख़ुशनसीब का हिस्सा है जो ख़ुदा का हक़ भी पहचाने और बन्दों का हक़ भी, और जो दीन के इस सही तसव्वुर के साथ ज़िन्दगी गुज़ारे कि ख़ुदा से भी बेहतरीन तअल्लुक़ क़ायम रखे और बन्दों से भी, ख़ुदा का शुक्र गुज़ार बन्दा भी रहे और बन्दों के लिये दया और मुहब्बत का पैकर भी।

बेशक इबादत व रियाज़त और ज़िक्र व फ़िक्र की दीन में बड़ी ही अहमीयत है, और उनसे महरूम उजाड़ ज़िन्दगी इस्लाम को हरगिज़ पसन्द नहीं है, लेकिन इबादत व नवाफ़िल और ज़िक्र व फ़िक्र की ऐसी व्यस्ततायें जो आदमी को दुनिया की ज़िम्मेदारियों से बिल्कुल ग़ाफ़िल कर दें और वह दुनिया के किसी काम का ही न रहे, इस्लाम की नज़र में हरगिज़ पसन्दीदा नहीं। इस्लाम का पसन्दीदा आदमी वह है जो इबादत व ज़िक्र से भी सम्बंध रखे, इन्सानों के अधिकारों को भी अदा करे और दुनिया की ज़िम्मेदारियां भी अदा करने की कोशिश करे ।

एक बार कुछ सहाबी किसी सफ़र से वापस आने के बाद आप

सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुये और अपने सफ़र के एक साथी की बहुत तारीफ़ करने लगे, कि ''फ़लां साथी तो बहुत ही नेक है, ऐसा नेक तो हम ने किसी को पाया ही नहीं, सफ़र के दौरान यह हर वक़्त क़ुरआन की तिलावत में लगे रहते, और जब भी हमारा क़ाफ़िला किसी जगह पड़ाव डालता, यह साहब किसी दूसरे काम की तरफ़ ध्यान न देते बस नफ़ली ज़िक्र और दुआओं में मशग़ूल हो जाते''

सहाबा कराम रज़ि० का यह ज़ेह्न सामने आने के बाद आप ने ज़रूरी समझा कि फ़िक्र व नज़र की तरबीयत की जाये। और आप सल्ल० ने बड़े ही हक़ीमाना अन्दाज़ में सहाबा कराम से दो सवाल करके दौराने सफ़र की दूसरी अहम ज़िम्मेदारियों की अहमीयत वाज़ेह फ़रमाई आप सल्ल० ने पूछा ? ''फिर उसके सामान की हिफाज़त कौन करता था और उसके ऊँट को चारा-पानी कौन देता था ?'' सहाबा कराम रज़ि० बोले ''हम सब उनके सामान की हिफ़ाज़त करते थे और हम ही उनके ऊँट को चारा-पानी देते थे''।

सहाबा कराम रज़ि० का यह जवाब सुनकर आप सल्ल० ने फ़ैसला सुना देने वाले अन्दाज़ में एक ऐसी बात कही कि उनकी आंखे खुल गयीं आप सल्ल० ने फ़रमाया ''तब तो तुम लोग उससे बेहतर हो''

यह फ़ैसला देकर दरअस्ल आप सल्ल० ने उनको बताया कि इस्लाम को ज़िक्र व फ़िक्र और वज़ीफों की कोई ऐसी मशग़ूलीयत हरगिज़ मतलूब नहीं है जिसकी वजह से आदमी अपनी दूसरी ज़िम्मेदारियों से ग़ाफ़िल हो जाये । यह एक रुखा अन्दाज़े फ़िक्र व अमल दीन के मन्शा के ख़िलाफ़ है। दीन व दुनिया की ज़िम्मेदारियों को मिसाली अन्दाज़ में पूरा करते

हुये आख़िरत को कामयाब बनाने का सबक़ देता है और इस सबक़ की अहमीयत और ताक़ीद का हाल यह है कि ख़ुदा के रसूल सल्ल० जब दुनिया से रुख़सत हो रहे हैं, सांस में घड़घड़ाहट शुरू हो चुकी है, तकलीफ़ की शिद्दत और सख़्ती से आप कभी चादर मुंह पर डालते और कभी हटाते हैं। इसी बेचैनी और तकलीफ़ में आप के होठ हिलते हैं क़रीब बैठे लोगों ने कान लगाये और आप फ़रमा रहे थे -

''नमाज़, नमाज़ और जो तुम्हारे ताबेअ (अधीन) हों ।'' चलते-चलते आपने उम्मत को बताया कि दीन, ख़ुदा और बन्दों के अधिकारों को अदा करने ही का नाम है। ख़ुदा के अधिकारों में सब से बड़ा हक़ यह है कि नमाज़ की पाबन्दी की जाये और ख़ुदा के बन्दों में सबसे ज़्यादा तवज्जो के हक़दार समाज के वह गिरे-पड़े लोग हैं जो तुम्हारे ताबेअ और मोहताज हैं।